सत्य साहित्य

वर्ष 9/ अंक 2
जनवरी 2026
Year 9/ No. 2
January
2026

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

जीवन का मैंने सौंप दिया,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है,
सरकार तुम्हारे हाथों में॥
हम तुम को कभी नहीं भजते,
तुम हम को कभी नहीं तजते।
अपकार हमारे हाथों में,
उपकार तुम्हारे हाथों में॥२॥
हम पतित हैं तुम हो पतित पावन,
हम नर हैं तुम हो नारायण हो।
हम हैं संसार के हाथों में
संसार तुम्हारे हाथों में॥३॥
हम बिन्दु बनाया करते हैं,
एक सेतु विरह के सागर का।
जिस से हम पहुंचा करते हैं,
उस पार तुम्हारे हाथों में॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- नव वर्ष की बधाई
- Sri Ram's True Devotee
- पुस्तक परिचय
- परमेश्वर बड़ा दयालु है
- ईर्ष्या: एक भयंकर वृत्ति
- श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण—पेटलावद
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

नव वर्ष की बधाई

श्रीराम Sri Ram Sharnam
8 Ring Rd.
New Delhi - 24
110024

सप्रेम नमस्कार।

परमेश्वर श्रीराम कृपा आप पर सदा सदा सदा बनी रहे।
अपने सब परिवार को मेरे नमस्कार प्राप्त हों।
नव वर्ष सबके लिए शुभ हो, मंगल हो, कल्याण हो।
शुभ हो मंगल हो, कल्याण हो।। शुभ हो मंगल हो, कल्याण हो!!!

भाई प्रेम

Ram Nam & Mantra are very very powerful; Its japa & meditation ensure peace & salvation. Please continue your sadhana.

Best wishes for a great & peaceful new year.

Happy new year.

[illegible]

राम नाम और मंत्र अत्यंत शक्तिशाली हैं; इनके जप और ध्यान से शांति और मोक्ष सुनिश्चित है। कृपया अपनी साधना जारी रखें। आपको एक उत्तम और शांतिपूर्ण नव वर्ष की शुभकामनाएँ। नया साल शुभ एवं मंगलमय हो।

Sri Ram's True Devotee

सत्यानन्द

Jealousy, hatefulness and quarrelsomeness have no place in the life of a spiritual aspirant. While on the one hand, these tendencies work to scorch (burn) the lotus grove of the spiritual aspirant, these also create unrest in the family as well as the society. The people at large should vouch for the devotees of Sri Ram to be beyond discord and strife, attachment and envy, partisanship and obstinacy (fanaticism). Sri Ram's true devotee does not betray these vices and, instead, does more good than those who happen to be afflicted with vices like partisanship, factionalism, discord and strife. It should be known for sure that simple and truthful life acquired through control over passions becomes a potent instrument in reforming and elevating one and all.

(Upaasak Ka Aantarik Jeevan, pp.14-15) ■

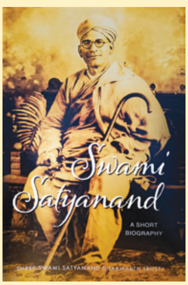

पुस्तक परिचय

स्वामी सत्यानंदः एक संक्षिप्त जीवनी

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, ने भगवद् साक्षात्कार शताब्दी वर्ष में काफी खोज व प्रमाणित स्रोतों से जानकारी प्राप्त करके इस महान् सन्त की संघर्षपूर्ण, परमेश्वर प्राप्ति की रोचक एवं सफल जीवन गाथा अंग्रेज़ी में प्रकाशित की है जो कि साधकों के लिए सुरुचिपूर्ण व प्रेरणादायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक में प्रामाणिक तथ्यों का विवरण है जिसे उनके निर्वाण के साठ वर्ष बाद एकत्र किया गया है।

स्वामी सत्यानंद, अमृतवाणी के रचयिता और श्री रामशरणम् के संस्थापक ने भक्ति, प्रेम, करुणा और सेवा से युक्त जीवन जीने के लिए एक अनोखा आध्यात्मिक मार्ग प्रकाशित किया।

1868 में जन्मे, स्वामी जी का जीवन लगभग एक शताब्दी तक फैला रहा। उनकी आध्यात्मिक खोज एक अनाथ बालक के रूप में शुरू हुई, जब उन्होंने जैन धर्म अपनाया और दस वर्षों तक एक तपस्वी मुनि के रूप में जीवन व्यतीत किया। 1891 में आर्य समाज से जुड़कर संन्यासी के गेरुआ वस्त्र धारण किए। शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों का गहन अध्ययन करने के बाद, वे आर्य समाज के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक बने, विशेषकर उन दशकों में जब उत्तर भारत में इसका प्रभाव अपने चरम पर था।

दिव्य ज्ञान की खोज ने स्वामी जी को 1925 में डलहौजी की ओर प्रस्थान करने के लिए प्रेरित किया। गहन तप और ध्यान के बाद, उन्हें दिव्य अलौकिक दर्शन प्राप्त हुआ। इन रहस्यमय अनुभूतियों ने उन्हें अमृतवाणी की रचना करने और पारंपरिक हिंदू धर्म में निहित एक विशिष्ट मार्ग विकसित करने के लिए प्रेरित किया—एक ऐसा मार्ग जिसे आधुनिक जटिल दुनिया में भी सरलता से प्रतिदिन, आचरण में लाया जा सकता है। जाति, वर्ग, दर्जे और लिंग के भेदों को अस्वीकार करते हुए, स्वामी जी ने कोई नया सम्प्रदाय स्थापित नहीं किया। फिर भी उन्होंने यह दर्शाया कि वैराग्य को आदर्श गृहस्थ जीवन में भी अपनाया जा सकता है, एक ऐसा जीवन जो क्रोध, लोभ और ईर्ष्या से मुक्त हो।

स्वामी जी की यह प्रेरणादायक और अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा इस गहन शोधपूर्ण जीवनी का केंद्र है। सरल और सहज शैली में लिखी गई यह पुस्तक आधुनिक हिंदू धर्म में रुचि रखने वालों के साथ–साथ उन सभी पाठकों को आकर्षित करेगी जो एक सरल, सार्थक और विकसित जीवन जीने के लिए आध्यात्मिक मार्ग की तलाश में हैं।

ये पुस्तक श्रीरामशरणम् मुख्यालय, नई दिल्ली व अन्य श्रीरामशरणम् केन्द्रों पर उपलब्ध है।

इस ग्रन्थ का हिंदी में अनुवाद किया जा रहा है और यह शीघ्र ही उपलब्ध होगी। ■

परमेश्वर बड़ा दयालु है

प्रेम

महाराज (स्वामी जी महाराज) के श्री मुख वाक्य हैं– जो इतने लोग नाम जपते हैं, नाम लेते हैं, अपने अपने उनके नाम में, मैं उनको नमस्कार करता हूँ। राम दरबार से अवतरित जो राम नाम है, इस प्रसाद में अपनी ही शक्ति है। इस प्रसाद को पा कर यदि कोई इधर उधर भटकता है, तो उसकी भूल है। फिर कहे मेरा मन नहीं लगता – अपने आप में टटोलना चाहिए। जब दिल में वैर किया, निन्दा की थोड़ी देर के लिए सोचें कि मेरा मन परमेश्वर की तरफ लगे। फिर तो उसी तरफ ही जाएगा– सोचने की बात है, अपना साक्षी आप हुआ करता है कि मैं 24 घंटे में क्या क्या किया करता हूँ, कितनी बार परमेश्वर को याद करता हूँ ?

यदि सोचें कि मुझ में इस चीज़ का भाव है, मन व्याकुल होता है। जब ध्यान में बैठे मन तो उस तरफ ही रहता है, व्याकुल ही रहता है – इतना ज़रूर है कि मैं ध्यान में बैठता हूँ पर वह खुद ही जानते हैं कि क्या सोचते रहे, कहाँ भटकते रहे?

परमेश्वर बड़ा दयालु है, सब पर करुणा करता है। यदि भावना नहीं है आप किसी से प्रीति और किसी से वैर द्वेष, फिर दुःख होता है। अपना ही जंजाल है, खुद ही घाव करके सोचते हैं कि यह घाव भर जाए। वैसे तो राम नाम में उतनी शक्ति है कि घाव भर जाते हैं।

माता कौशल्या ने कहा कि जो जिसका हो कर चला जाए, याद आती है। यदि यह मन में आ जाए तो घाव भर नहीं सकता। अपने मन की स्थिति को खुद देखें। क्यों किसी से वैर करना ? धारणा करें कि मैं उससे वैर विरोध नहीं करूँगा। मेरे लिए सभी समान हैं। किसी को ताना देता हूँ तो परमेश्वर को ताना देता हूँ। परमेश्वर तो दया करते हैं। जब ऐसी बातें करते रहेंगे तो कैसे उसकी कृपा के पात्र बन सकेंगे? जिसके हृदय में पीड़ा है, दर्द है, प्रेम है – वह परमेश्वर के बड़े नज़दीक है। जिसके मन में वैर द्वेष है वे उतने ही दूर ! अपने आपको जितना सरल – अबोध बालक समझेंगे उसके दरबार में जाएंगे तो उसकी कृपा ज़रूर होगी। माँ के पास बच्चे जाते हैं तो ऐसा हो नहीं सकता कि माँ कुछ खाने को न दे। जो बच्चा माँगता ही रहे, माँगता ही रहे, माँ कब तक बर्दाशत करे–डाँटना भी पड़ता है। दूसरों को भला बुरा, निन्दा करें और चाहते हैं हमारा ही आदर हो–मान हो। परमेश्वर की कृपा तब होगी जब राम दरबार में पहुँचने के काबिल हो सकेंगे। फिर भी परमेश्वर बहुत दयालु है। महाराज भी कहते हैं जो मेरी शरण में आ जाता है, मैं स्वीकार कर लेता हूँ। जो बालक बन कर परमेश्वर के दरबार में आए और माँग करे तो नहीं हो सकता कि माँग पूरी न हो। जब सेवक

बन गए तो कृपा होने में देरी नहीं लगेगी।

जब कोई तालाब में पत्थर फैंकता है लहरें दूर तक जाती हैं। उसी प्रकार सरल भाव से निष्काम भाव से नाम लेते हैं– तरंगें दूर दूर तक जाती हैं। जब परमेश्वर की कृपा होगी तो लोग पीछे भी लगेंगे और भी मिलेंगे– नाम को बसाना चाहिए, शेष माया ही माया है।

महाराज (स्वामी जी महाराज) कृपा से जो नाम मिला लाभ उठाइएगा। मालूम नहीं कितना समय बाकी मिलेगा या नहीं मिलेगा। सब बातों को छोड़ कर मन नाम में लगाना चाहिए। श्री राम हमारी भूलों को क्षमा करें, हम तो भूलनहार हैं – यह तो तेरी कृपा है जिससे हम साहस कर सकते हैं तेरे पास आने का। श्री राम! तू कृपा कर, कृपा कर, कृपा कर!

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुख वाक्य, साधना सत्संग हरिद्वार 27.07.69, परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से) ■

ईर्ष्याः एक भयंकर वृत्ति

विश्वामित्र

साधक ईर्ष्या के प्रति सदा सावधान रहें, इससे सदा बचे रहें। कहीं मन में ईर्ष्या न आवे - लेश मात्रा भी नहीं। आत्मिक प्रगति तत्काल रोक देगी यह, कमाई को खा जायेगी - पूरी नहीं तो काफी मात्रा में।

ईर्ष्या जिसे कहा जाता है – वह व्यक्ति को भीतर ही भीतर जलाकर राख कर देती है। जैसे अंगीठी में कोयला जलता है। किसी दूसरे व्यक्ति को तो वह कोयला तब जलाएगा जब वह व्यक्ति कोयले के संपर्क में आएगा। लेकिन अंगीठी को तो यह कोयला निरंतर जला रहा है। कोयला तो उसे निरंतर क्षीण कर रहा है, जर्जर कर रहा है। थोड़ी देर के बाद अंगीठी आपको बदलनी पड़ती है या उसको (रिपेयर) अंदर से लीपना–पोतना पड़ता है। तब जाकर वह फिर काम करने योग्य हुआ करती है।

क्या है यह ईर्ष्या ? स्पष्ट है जिसके प्रति ईर्ष्या है, वह व्यक्ति जिसके प्रति आप ईर्ष्यालु हो, वह आपसे आगे है। अन्यथा ईर्ष्या क्यों होती है? वह आपसे

धन में आगे है, यश–मान में आगे है, कीर्ति में आगे है। संपत्ति उसके पास आपसे अधिक है, कपड़े, साड़ियाँ, शिक्षा उसके पास आपसे अधिक है। मानो गुण अधिक हैं। आपसे कुछ न कुछ अधिक है उसमें, तभी आप उसके प्रति ईर्ष्यालु हैं। यह बात तो आप स्वीकारें या न स्वीकारें पर यह स्पष्ट होता है कि वह व्यक्ति जिसके प्रति आप ईर्ष्यालु हैं, वह आपसे बहुत आगे है अन्यथा ईर्ष्या न होती।

एक साधक की दृष्टि से, अच्छा तो यह होता कि आप उसे देखकर परमेश्वर से विनम्र प्रार्थना करते कि परमात्मदेव! तेरी कृपा हो जाए तो मैं भी वैसा ही सद्गुणी बन सकता हूँ। तेरी कृपा हो जाए तो मेरे पास भी उतनी ही साड़ियां हो सकती हैं, उतने ही गहने हो सकते हैं, उतना ही सब कुछ हो सकता है, उतना ही बड़ा मकान मेरे पास हो सकता है। मैं भी वैसा ही गुणी बन सकता हूँ। मैं भी वैसे ही तेरा प्यारा बन सकता हूँ। मैं भी वैसे ही साधना में आगे बढ़ सकता हूँ।

लेकिन जब ऐसा न हो तो इस दुर्गुण का दुरुपयोग होता है! इस बात का आप दुरुपयोग करते हैं कि नहीं। उसके पास ऐसा क्यों है और मेरे पास क्यों नहीं है? जब आपके अंदर यह निराशा झलकने लग जाती है तो उसे ईर्ष्या कहा जाता है। अब उसकी सोच बड़ी विकृत हो जाती है। किसी ढंग से इसके पास जो कुछ है वह छीनना चाहिए। इस लिए वह गुणी ही नहीं, वह दुर्गुणी है। वह उनमें छिद्र ढूँढता है और इस प्रकार के तर्क देता है। असूया वृत्ति वाले लोग, ईर्ष्या वृत्ति वाले लोग, प्रायः बुद्धिमान होते हैं, तार्किक होते हैं। इस प्रकार के तर्क प्रस्तुत करेंगे, इस प्रकार से बातों का चित्रण करेंगे, इस प्रकार से आपको बताएँगे कि आपको convince होना पड़ेगा कि यह जो कह रहे हैं यही सत्य है। वह गुणी नहीं है, उसमें दुर्गुण ही दुर्गुण हैं। क्यों यह ऐसा वर्णन कर रहे हैं – इन्होंने अपनी आंखों से दुर्गुण देखे हैं और इसी प्रकार से वे वर्णन कर रहे हैं, इसलिए यह व्यक्ति दुर्गुणी है। यह ईर्ष्या करवाती है।

घर–घर में ईर्ष्या है। व्यक्ति–व्यक्ति में ईर्ष्या है। देवरानी–जेठानी के प्रति ईर्ष्या है। भाभी–ननद के प्रति ईर्ष्यालु है। भाई–भाई में ईर्ष्या है। बहन–भाई में ईर्ष्या है। सास–बहू में ईर्ष्या है। देश–देश में ईर्ष्या है। समाज–समाज में ईर्ष्या है। परिवार दूसरे परिवार के प्रति ईर्ष्यालु है। यदि यह एक दुर्गुण हमारे अंदर से निकल जाए, देश से निकल जाए, समाज से निकल जाए, परिवार से निकल जाए तो इतनी बड़ी जो लड़ाइयाँ हो रही हैं, इतने बड़े जो युद्ध हो रहे हैं, इतना कुछ किया जा रहा है वह सब कुछ परमेश्वर की कृपा से शांत हो जाए।

अभिमान ही इस दुर्गुण के पीछे है। इसी के कारण व्यक्ति क्रोधित होता है। यह मूल में देखा जाए तो इसके पीछे ईर्ष्या ही है। मेरे साथ यह ऐसा क्यों नहीं है? मैं इतनी सुंदर क्यों नहीं हूँ? मेरे पास ऐसी सुंदरता क्यों नहीं है? मेरे पास इतना धन क्यों नहीं है? उसके पास भी धन की कमी होनी चाहिए। ईर्ष्यालु व्यक्ति दिन–रात सोचने लग जाता है कि किस प्रकार से इसका विनाश किया जा सके। किस प्रकार से इसका सर्वनाश हो। यह वृत्ति बढ़ती–बढ़ती इतनी विकृत हो जाती है कि यदि उस व्यक्ति का अनिष्ट हो जाता है तो आपकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। मानो आज आपका दिन बन गया। आज उस व्यक्ति जिसके प्रति आप ईर्ष्यालु हैं यदि उसको बुखार चढ़ जाता है, उसका कुछ अनिष्ट हो जाता है तो आपकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रह जाता। आपके दुःख भी मानो मिट जाते हैं। मत

सोचिएगा कि यह कोई आपके जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। नहीं! आप और पतन को प्राप्त होते जा रहे हैं।

घर में दूसरा बच्चा पैदा होता है तो बड़ा बच्चा या बच्ची अँगूठा चूसना आरंभ कर देते हैं। बिस्तर में पेशाब करना आरंभ कर देते हैं। ज़िद करनी शुरू हो जाती है। खाने के लिए बड़ी माँगें प्रस्तुत होनी आरंभ हो जाती हैं। बिना वज़ह बच्चा ज़िद्दी होना आरंभ कर देता है। इसलिए कि जो ध्यान बट गया है उसे अपनी ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है। जो ध्यान पहले एक बच्चे पर ही हुआ करता था अब दो में बंट गया है। ईर्ष्या के कारण यह उस बच्चे से सहन नहीं हो रहा। ईर्ष्यालु बच्चे को लगता है कि माँ–बाप का व्यवहार पक्षपाती है। वह ज़िंदगी भर भूलता नहीं है। यही अपनी वृत्ति, अपना वह दुर्गुण स्कूल में ले जाता है। वहाँ जाकर भी वह कुछ न कुछ करामात दिखाना चाहता है। स्कूल में उसकी चलती नहीं। घर आकर सारी कसर निकाल लेता है। उसका एक ही काम हो जाता है, किसी न किसी ढंग से मैं अपने मां–बाप को दुःखी करूँ। यह मेरी ओर ध्यान न दे कर, जो नया आया है या आई है उसकी ओर ध्यान दे रहे हैं–ईर्ष्या के कारण।

यह बड़ी भयंकर वृत्ति है। जिस वक्त मैं छोटा हुआ करता, स्कूल में पढ़ा करता तो उस वक्त ईर्ष्या की चर्चा सुनकर मन में यही आता कि यह एक ऐसा दुर्गुण है कि जब व्यक्ति श्मशान घाट भी चला जाता है तब भी यह दुर्गुण नहीं छूटता।

ईर्ष्या अग्नि इतनी आसानी से शांत नहीं होती, बुझती नहीं है। आप कितने भी बड़े हो जाएँ। सत्ता पद में बड़े हो जाएँ, साधना में बड़े हो जाएँ। उस दोष को निकालने के लिए परमेश्वर की कृपा की नितांत आवश्यकता है।

संत–महात्मा, भक्त, साधक, सिद्ध अपने आपको कहने वाले भी इस वृत्ति से रहित नहीं हैं। लेश मात्र भी यदि यह वृत्ति रुक जाती है तो वह आपके अंतःकरण में वह प्रसन्नता, वह शांति, वह आनंद नहीं रहने देती। कहीं न कहीं से यह अपनी झलक दिखा के रहेगी। कहीं न कहीं से अपना यह प्रकटीकरण करके रहेगी यह ईर्ष्या की वृत्ति।

दो मित्र थे। चतुर सिंह और विशाल, सहपाठी थे। विशाल बहुत होशियार था इस लिए अध्यापकों का बड़ा प्रिय था। उसकी बुद्धि भी विशाल थी। यह चतुर सहन नहीं कर सकता था। विशाल के विचार ही बड़े भिन्न थे, बड़े विशाल विचार थे, उदार विचार थे उसके। विशाल हृदय था उसका। उसे राजा ने कोई नौकरी देनी चाही तो उसने ठुकरा दी। उसने महाराज से कहा कि मैं इस नौकरी के योग्य नहीं हूँ। मैं तो एक मामूली अध्यापक हूँ। मैं अध्यापक ही बनकर रहूँगा। मानो ईमानदारी का काम मैं करना चाहता हूँ और वही मैं करता रहूँगा। मैं स्वयं शिक्षा का प्रिय हूँ और मुझे शिक्षा ही प्रिय है। इसलिए कहीं पर छोटे–छोटे बच्चों का अध्यापन का कार्य आरंभ कर दिया।

चतुर, चतुर था इसलिए राजा के यहाँ नौकर हो गया। धीरे–धीरे चापलूसी इत्यादि करके वह राजा का बहुत प्रिय हो गया। लेकिन अभी भी वह विशाल को भूला नहीं है। कहाँ बेचारा विशाल और कहाँ यह चतुर। लेकिन ईर्ष्या की अग्नि अभी भी चतुर के अंदर जल रही है। वह अभी इस अग्नि से रहित नहीं

हुआ। अभी भी वह किसी न किसी ढंग से इसको नीचा दिखाना चाहता है। देख मैं कहाँ और तू कहाँ?

संयोग की बात है कि राजा के यहाँ एक समस्या आ गई। चतुर ने सोचा कि इस समस्या का समाधान, हो सकता है विशाल कर सके और यदि नहीं कर सका तो यह समय है उसको नीचा दिखाने का। इसलिए उसे बुलवाया जाए। चतुर ने सवाल रख दिया, राजा के सामने कहा, "मेरा एक मित्र है विशाल नाम का, वह वहाँ बच्चों को पढ़ाता है, उसे बुलाया जाए। उसका पांडित्य बड़ा प्रबल है, बड़ा प्रचंड है। उसको बुलाया जाए। हो सकता है वह आपके प्रश्न का उत्तर दे जाए।" वास्तव में चतुर चाहता नहीं था कि उत्तर मिले। वह तो चाहता है कि विशाल को उत्तर न मिले ताकि उसको नीचा दिखाया जा सके, सज़ा मिले उसको।

विशाल आ गए। विशाल के ऊपर परमेश्वर की कृपा है। उसने अपने उत्तर से राजा को बहुत संतुष्ट किया है। राजा ने तत्काल अपने गले की कंठी उतार कर विशाल के गले में डाल दी। चतुर और जल कर राख हो गया। उसमें ईर्ष्या की अग्नि अब और बढ़ गई है और प्रबल हो गई है। आज उससे नहीं देखा जा रहा। आज उससे नहीं रहा जा रहा। विशाल उसको मिलकर उसका धन्यवाद करके, प्रेम करके गया क्योंकि विशाल के हृदय में चतुर के प्रति किसी प्रकार का द्वेष या कोई इस प्रकार की ग़ैर भावना बिलकुल नहीं है। महान् है विशाल–अपना अनिष्ट करने वाले के भी प्रति यदि दुष्ट भावना, अनिष्ट भावना नहीं है तो यह बड़ी विशालता है, महानता है।

कंठी चुराने के लिए आज रात को चतुर उसके घर चले गए। कहाँ रखी होगी विशाल ने? सोच–विचार करने के बाद सूझ–बूझ के बाद देखा, उसके घर में एक छोटा सा ट्रंक है। चतुर ने सोचा कि ज़रूर उसी में संभाल के रखी होगी। रात का समय था जिस वक्त उस ट्रंक को खोला, छोटी सी अटेची जिसे कहा जाता है। वह ट्रंक खोला तो बिच्छू ने काट लिया, रोने लग गया। रोने की आवाज़ सुनकर विशाल पत्नी सहित उठे, उसके पास आए। कौन हो आप? क्या हुआ है आपको? क्या हुआ?

"अरे मित्र तू! रात को इस कमरे में बिच्छू निकला था। मैंने इसे पकड़ के ट्रंक में डाल दिया सोचा सुबह इसको जंगल में छोड़ दूँगा। लगता है तुझे बिच्छू ने काट लिया है। व्यक्ति जब अविवेकपूर्ण हो जाता है तो अपने दुर्भाग्य का निर्माण वह स्वयं करता है। यदि सौभाग्य का निर्माण वह स्वयं करता है तो दुर्भाग्य का निर्माण भी वह स्वयं ही करता है। "काश! तूने एक दफा मुझे संकेत किया हुआ होता कि तू यह कंठी चाहता है। मेरे लिए तो यह बेकार है। तू अभी ले जा इस कंठी को।"

ईर्ष्या अग्नि इतनी आसानी से शांत नहीं होती, बुझती नहीं है। आप कितने भी बड़े हो जाएँ। सत्ता पद में बड़े हो जाएँ, साधना में बड़े हो जाएँ। उस दोष को निकालने के लिए परमेश्वर की कृपा की नितांत आवश्यकता है। गिड़गिड़ाइए परमात्मा के आगे। परमात्मा, संत–महात्मा कहते हैं ईर्ष्यालु व्यक्ति भक्त नहीं हो सकता, संत नहीं हो सकता। एक साधक भी नहीं हो सकता। महाराज! क्या ज़िंदगी ऐसी ही व्यतीत हो जाएगी। गिड़गिड़ाते हुए परमात्मा के आगे प्रार्थना करिए कि वह हमारे इस दोष का उन्मूलन कर दे, उसे जड़ से निकाल दे। परमेश्वर कृपा।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन 18.5.2000) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : पेटलावद

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

सन् 1972 में राम जी की असीम कृपा से और गुरुजनों के आशीर्वाद से झाबुआ जिले के पेटलावद नगर से 5 साधकों ने हांसी सत्संग में परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज से दीक्षा प्राप्त करी। उसके पश्चात् उन्होंने पेटलावद नगर में सत्संग करना आरम्भ किया। उन्होंने पेटलावद में घर–घर जाकर श्रीरामशरणम् का प्रचार–प्रसार किया और स्वामीजी महाराज के बताए मार्ग को लोगों तक पहुँचाया। फिर परमेश्वर की कृपा से अनेक साधक श्रीरामशरणम् से जुड़ते चले गए। कई सालों तक सत्संग साधकों के घरों में ही होता रहा।

स्वामीजी के बढ़ते परिवार को देखकर एक साधक परिवार ने सन् 2002 में सत्संग लगाने हेतु भूमि दान करी। सन् 2004 के शुरूआत में सभी साधकों ने मिलकर सोचा कि एक छोटा सा सत्संग हॉल बनाया जाये। फिर सबने मिलकर एक सत्संग भवन का निर्माण कराया जिसका क्षेत्रफल 1500 sq ft (75 फीट लम्बाई और 20 फीट चौड़ाई) है ।

सन् 2004 में परम पूज्य डॉ विश्वामित्र महाराज जी झाबुआ में खुला सत्संग लगाने पधारे। उस समय कुछ साधक जाकर महाराज जी से मिले और गुरुदेव से निवेदन किया कि पेटलावद में एक छोटा सत्संग हॉल बनाया गया है। पूजनीय महाराज जी अति प्रसन्न हुए और दोनों हाथ खड़े करके बोले,"वाह! वाह! क्या बात है। आपने सत्संग हेतु हॉल बना लिया।" उसके पश्चात् महाराज जी ने उद्घाटन की तारीख़ तय की, दिनांक 3.11.2004 बुधवार और आपजी ने अपने श्रीमुख से फरमाया वैसा ही उद्घाटन होगा जैसा कि हरिद्वार का हुआ था। साथ में हवन और भंडारा भी होगा।

आख़िर वह दिन आ ही गया जिसका सबको बेसब्री से इंतज़ार था। 2.11.2004 को अखंड जाप और हवन प्रारम्भ हुआ जिस में सभी साधकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। अगले दिन पूजनीय महाराज जी पधारे और उन्होंने हवन कुंड में पूर्णाहुति की व टैंट के अंदर अखंड जाप की समाप्ति हुई। तत्पश्चात् पूज्य श्री महाराज जी ने दहलीज़ पूजन, शिलालेख का अवलोकन, अपने कर कमलों द्वारा किया। इसके उपरांत उन्होंने मुख्य द्वार का फीता काटकर कन्याओं के साथ कलश सहित सत्संग हॉल में प्रवेश किया। फिर अमृतवाणी का पाठ, प्रवचन, भजन,

धुन व आरती हुई। पूरा वातावरण राममय हो गया।

पूजनीय महाराज जी ने श्रीरामशरणम् पेटलावद को सत्संग हेतु समर्पित किया और प्रवचन में अपने श्रीमुख से यह फरमाया, ''यह श्रीरामशरणम् एक ऐसा आध्यात्मिक चिकित्सालय बनेगा कि यहाँ जो भी दुःख–दर्द से पीड़ित आएगा उसका दुःख दूर हो जायेगा।''

उद्घाटन के लिए एक भव्य पंडाल का आयोजन किया गया था जिसमें हज़ारों की संख्या में साधक–साधिकाएं उपस्थित थे। लोग आस पास के गाँवों से भी आए थे। उस दिन 4770 साधक–साधिकाओं ने पूज्य श्री महाराज जी से नाम दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात् सबने भोजन प्रसादी ग्रहण की और महाराज जी बूंदी की प्रसादी अपने साथ दिल्ली ले गए।

सन् 2014 में सत्संग भवन में विस्तार करने हेतु, दो और मंज़िलों का निर्माण हुआ और अब यहाँ मुख्य हॉल के अलावा दो और हॉल हैं और 400 साधकों के बैठने की व्यवस्था है।

गुरुजनों की असीम कृपा से पेटलावद श्रीरामशरणम् में सुचारु रूप से दैनिक सत्संग होता है। यहाँ प्रातः प्रतिदिन 6 से 7 बजे जाप होता है और सायं 7 से 8 बजे दैनिक सत्संग होता है जिसमें 25 से 30 साधक सम्मिलित होते हैं तथा रविवार को 9:00 से 10:00 बजे श्री अमृतवाणी सत्संग नियमित रूप से चल रहा है। परमेश्वर की कृपा से और गुरुजनों के आशीर्वाद से सारे कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं। हम सब साधकों की यही प्रार्थना है कि पेटलावद श्रीरामशरणम् पर गुरुजनों की असीम कृपा इसी तरह बरसती रहे। ■

ध्यान और कृपा

गुरु की कृपा और दृष्टि जिस पर पड़ जाए वह धन्य हो जाता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। पूजनीय महाराज श्री के दृष्टिपात के बाद मुझे अनेक अद्भुत अनुभव हुए। एक दिन जब मैं ध्यान में बैठी तो हाथों और पैरों में एक अजीब सी हलचल महसूस हुई। फिर सारे शरीर में एक अजीब परिवर्तन हुआ और साँसों की गति धीमी हो गयी। बाहर निकलने वाला श्वास तो मानो ख़त्म ही नहीं हो रहा था। मस्तिष्क में भी एक अजीब सी खुमारी थी। सारा शरीर धीरे धीरे से झूम रहा था। इतना सुखद व शांति पूर्ण अनुभव था कि मन चाहता था कि यह कभी ख़त्म न हो।

एक अन्य बार मैं जब ध्यान में बैठी तो मुझे पहाड़ों के पीछे से आता तेज सूर्य का प्रकाश दिखाई दिया। वह प्रकाश थोड़ी देर के बाद कुछ समय के लिए आँखों के सामने से ओझल हुआ, फिर लौट के आया और अंततः चला गया। यह इतना सुखद अनुभव था कि मैं उसे आज तक नहीं भुला पायी।

ध्यान में मुझे कभी तारे दिखते हैं, तो कभी राम राम राम सब ओर लिखा आँखों के सामने आ जाता है। दो बार तो मुझे ध्यान में शांत अवस्था में बैठे श्री राम दिखाई दिए। यह सब मेरे गुरुजनों की कृपा का ही फल है। धन्य हुआ मैं सतगुरु पाके, सतगुरु मेरे राम मिला दे। ■

औषध राम नाम

यह बात 1989 की है। एक बार एक दवाई की गोली मेरी खाने की नली (food pipe) में फँस गयी। जांच करने पर पता चला की food pipe में cancer है जो गोली फंसने से बढ़ गया। डॉक्टर ने कहा की नकली pipe लगानी पड़ेगी नहीं तो cancer सारे शरीर में फैल जायेगा। ऑप्रेशन और हॉस्पिटल दोनों तय हो गए। इंतज़ार सिर्फ मेरी बेटी का था जो लंदन से artificial food pipe लेकर आ रही थी।

सबको लग रहा था कि अब मैं बचूँगी नहीं और उदास थे। उधर मुझे लग रहा था जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं है। यह मेरे राम की या अंतर आत्मा की आवाज़ थी। मैं लगातार राम राम जपती रही और प्रभु और गुरुजनों की कृपा से पूरी तरह शांत थी। मैंने देखा कि राम दोनों हाथ फैला कर मुझ पर पुष्प वर्षा कर रहे हैं। मैं रात दिन यही दृश्य देखती कि मेरे राम मेरे साथ हैं और कृपा कर रहे हैं।

अब ऑपरेशन की सारी तैयारी हो गयी। डॉक्टर इकठ्ठा हो गए। तब मेरी बेटी ने (जो खुद एक सर्जन है) स्वयं जांच करने की अनुमति मांगी। उसने देखा कि नली में कुछ भी नहीं है, cancer का तो नामोनिशान भी नहीं है। सब डॉक्टर हैरान हो गए। सबने कहा कि चमत्कार हो गया। मुझे पता है कि यह मेरे गुरुजनों की और राम नाम की कृपा है। ''दीनदयाल विरिदु सम्भारी, हरहु नाथ मम संकट भारी।'' (सुंदरकांड रामचरितमानस) ■

Heartfelt Gratitude

Recently, life posed some tough challenges to me. Throughout these trying times, especially during both my surgeries, Pujya Maharaj ji's presence had been a profound source of comfort. Meditating twice daily and reciting the Amritvani filled me with inner peace and fortitude, allowing me to feel his support even in the most challenging times.

By following the Gurajans teachings, I found relief from feelings of loneliness, discouragement and self doubt. Pujniya Maharaj ji's wisdom - especially when he reminds us that "the mind's peace lies in consistent practice and surrender to the divine," - has been my guiding light. These words echo within me each day, helping me to release any heaviness and to reconnect with the strength within myself.

As Pujniya Maharaj ji has taught, "Strength and peace are cultivated within, these are gifts we nurture through patience and faith." Embracing this truth has allowed me to feel uplifted even in moments when I might have felt overwhelmed. Each time I recite the Amritvani, I feel a renewed sense of purpose, courage and connection.

Thank you, Maharaj ji, for being alongside me and for teaching me how to find resilience and comfort in faith. I am endlessly grateful for the gift of your guidance, and I hope to carry your teachings, grounded in peace and strength. ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(सितंबर से दिसम्बर 2025)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **जालंधर,** पंजाब में 21 सितंबर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 378 साधक सम्मिलित हुए और अन्तिम सभा में लगभग 600 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **हरिद्वार** में 23 सितंबर से 2 अक्तूबर तक नौ रात्रि रामायणी सत्संग लगा और 2 अक्तूबर को परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस पर पुष्पांजलि के साथ पूर्ति हुई ।
- **पठानकोट,** पंजाब में 4 से 5 अक्तूबर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 152 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 350 साधक सम्मिलित हुए और 5 अक्तूबर को श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की सभा में लगभग 750 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **हीरानगर,** जम्मू व कश्मीर में 7 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 174 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की और लगभग 500 व्यक्ति सम्मिलित हुए।
- **अमृतसर,** पंजाब में 12 अक्टूबर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 195 साधक सम्मिलित हुए और 47 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरदासपुर,** पंजाब में 24 से 26 अक्तूबर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 143 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू** में 31 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 207 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 517 साधक सम्मिलित हुए और 2 नवम्बर को श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की सभा में लगभग 1500 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **बहादुरगढ़,** दिल्ली में 5 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर,** पंजाब में 7 से 9 नवम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 133 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 382 साधक सम्मिलित हुए और श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की सभा में लगभग 1500 व्यक्तियों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवंबर तक परम पूजनीय श्री सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग हुआ। 11 नवम्बर को साधना सत्संग से पहले 3 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ग्वालियर,** मध्यप्रदेश में 15 से 16 नवम्बर को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कपूरथला,** फाज़लपुर में 21 से 24 नवम्बर तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 5 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मैलबोर्न,** ऑस्ट्रेलिया में 5 से 7 दिसम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 84 साधकों ने भाव चाव से भाग लिया और 7 दिसम्बर को 4 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ,** जम्मू व कश्मीर में 7 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 99 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। इसमें 333 साधक सम्मिलित हुए।

- **नर्मदापुरम,** मध्यप्रदेश में 9 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 296 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भिवानी,** हरियाणा में 12 से 13 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ और जिसमें 21 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर माह में 82 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **उज्जैन,** मध्यप्रदेश में 14 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 159 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागोद,** मध्यप्रदेश में 14 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 184 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **आलमपुर,** हिमाचल प्रदेश में 21 से 23 दिसम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 23 दिसम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **गुना,** मध्यप्रदेश में 25 दिसंबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **सूरत,** गुजरात में 27 से 28 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा और 28 दिसंबर को नाम दीक्षा होगी। ■

श्रीरामशरणम् दिल्ली में 31 दिसम्बर बुधवार को दैनिक सत्संग में श्री अमृतवाणी संकीर्तन के पश्चात् प्रातः 7:40 बजे श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ का शुभारंभ होगा जिसकी पूर्ति 1 जनवरी बृहस्पतिवार को प्रातः 7:00 बजे होगी। प्रातः 7:00 बजे से प्रातः 8:15 बजे तक विशेष सत्संग होगा। ■

Calendar

Sadhna Satsang (January to December 2026)

Indore	2 to 5 January	Friday to Monday
Hansi	6 to 9 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Friday to Monday
Haridwar	29 March to 3 April	Sunday to Friday
Haridwar (for Jhabua Sadhaks)	9 to 12 April	Thursday to Sunday
Haridwar (for Jhabua Sadhaks)	14 to 17 April	Tuesday to Friday
Haridwar	30 June to 3 July	Tuesday to Friday
Haridwar	24 to 29 July	Friday to Wednesday
Haridwar	30 September to 3 October	Wednesday to Saturday
Haridwar(Ramayani)	11 to 20 October	Sunday to next Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Kapurthala(Fazalpur)	20 to 23 November	Friday to Monday

Naam Diksha in Shree Ramsharanam Delhi (January to December 2026)

January	25	Sunday 11AM
March	29	Sunday 11AM
April	12	Sunday 10.30 AM
May	17	Sunday 10.30 AM
July	29	Wednesday 4 PM
August	23	Sunday 10.30 AM
October	11	Sunday 10.30 AM
November	8	Sunday 11AM
December	13	Sunday 11AM

Purnima (January to December 2026)

January	3	Saturday
February	1	Sunday
March	3	Tuesday
April	2	Thursday
May	1	Friday
May	30	Saturday
June	29	Monday
July	29	Wednesday
August	28	Friday
September	26	Saturday
October	26	Monday
November	24	Tuesday
December	23	Wednesday

Naam Deeksha in Other Centers (January to December 2026)

Indore	04 January	Sunday
Kalyanpura, Jhabua	07 January	Wednesday
Bolasa	08 January	Thursday
Dahod	09 January	Friday
Alirajpur	10 January	Saturday
Jhabua	11 January	Sunday
Pune	17 January	Saturday
Pilibanga	18 January	Sunday
Rohtak	25 January	Sunday
Faridabad	26 January	Monday
Bikaner	01 February	Sunday
Gurugram, Haryana	06 February	Friday
Hansi	08 February	Sunday
Mumbai	15 February	Sunday
Ram Tirath Bansgahan	19 February	Thursday
Bilaspur	22 February	Sunday
Batala	28 February	Saturday
Amarpatan MP	01 March	Sunday
Ratangarh	07 March	Saturday
Kapurthala (Fazalpur)	22 March	Sunday
Narot Mehra	26 March	Thursday
Hisar	05 April	Sunday
Jawali	14 April	Tuesday
Bhareri	19 April	Sunday
Mandi	26 April	Sunday
Jandiala Guru	03 May	Sunday
Kandaghat	10 May	Sunday
Nepal	23 May	Saturday
Chambi	24 May	Sunday
Faridabad	25 May	Monday
Manali	16 June	Tuesday
Kishtwar JK	20 June	Saturday
Bhaderwah JK	21 June	Sunday
Lot	24 June	Wednesday
Ludhiana	30 August	Sunday
Obaidullaganj	07 September	Monday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	20 September	Sunday
Gurdaspur	27 September	Sunday
Hoshiarpur	04 October	Sunday
Sujanpur	25 October	Sunday
Pathankot	01 November	Sunday
Kathua	07 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	22 November	Sunday
Alampur	04 December	Friday
Gwalior	06 December	Sunday
Bhopal	13 December	Sunday
Surat	20 December	Sunday
Bhiwani	26 December	Saturday

Open Satsang (January to December 2026)

Jhabua	11 to 13 January	Sunday to Tuesday
Pune	17 January	Saturday
Pilibanga	18 to 19 January	Sunday to Monday
Banmore MP	22 January	Thursday
Bikaner	31 January to 1 February	Saturday to Sunday
Mumbai	14 to 15 February	Saturday to Sunday
Bilaspur	20 to 22 February	Friday to Sunday
Batala	28 February	Saturday
Amarpatan MP	01 March	Sunday
Delhi Holi Satsang	2 to 4 March	Monday to Wednesday
Ratangarh	7 to 8 March	Saturday to Sunday
Jhabua-Maun Sadhna	18 to 27 March	Wednesday to next Friday
Kapurthala (Fazalpur)	21 to 22 March	Saturday to Sunday
Narot Mehra	26 March	Thursday
Hisar	4 to 5 April	Saturday to Sunday
Bhareri	19 April	Sunday
Mandi	26 April	Sunday
Jandiala Guru	03 May	Sunday
Shanag	4 to 5 May	Monday to Tuesday
Kandaghat	10 May	Sunday
Nepal	21 to 23 May	Thursday to Saturday
Manali	14 to 16 June	Sunday to Tuesday
Lot	23 to 24 June	Tuesday to Wednesday
Rohtak	15 to 16 August	Saturday to Sunday
Rewari	5 to 6 September	Saturday to Sunday
Jalandhar	13 September	Sunday
Hiranagar	15 September	Tuesday
Jammu	18 to 20 September	Friday to Sunday
Gurdaspur	25 to 27 September	Friday to Sunday
Hoshiarpur	04 October	Sunday
Sujanpur	23 to 25 October	Friday to Sunday
Pathankot	31 October to 1 November	Saturday to Sunday
Kathua	07 November	Saturday
Amritsar	15 November	Sunday
Melbourne (Australia)	27 to 29 November	Friday to Sunday
Jawali	29 November to 1 December	Sunday to Tuesday
Alampur	3 to 4 December	Thursday to Friday
Gwalior	5 to 6 December	Saturday to Sunday
Surat	19 to 20 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	26 to 27 December	Saturday to Sunday

बच्चों द्वारा नए साल की शुभकामनाएँ

Cards made by children from different centers

प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदे और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय–समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर - 4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924